श्री राजेन्द्र-धनचन्द्र-भूपेन्द्र-यतीन्द्र-विद्याचन्द्र-जयन्तसेन-शान्ति
गुरुवरों के विचारों/कार्यों को समर्पित

यतीन्द्र वाणी

हिन्दी पाक्षिक

संस्थापक- प. पू. तपस्वी योगिराज, संयमवयः स्थविर श्री शान्तिविजयजी म. सा.
प्रेरक- माण्डवपुर तीर्थप्रेरक, प्रवचनकार प. पू. आचार्यप्रवर श्रीमद्विजय जयरत्नसूरीश्वरजी म. सा.

सम्पादक- पंकज बी. वालड़ स. सम्पादक- कुलदीप डाँगी 'प्रियदर्शी'

* वर्ष : 24 * अंक : 3 * मोटेरा, अहमदाबाद * दिनांक 1 मई 2018 * पृष्ठ : 4 * मूल्य 5/- रुपये

पालीताणा तीर्थ में वर्षीतप पारणा एवं सामूहिक आत्मोद्धार महोत्सव सम्पन्न

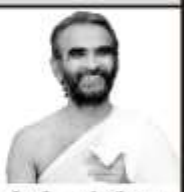

उदयपुर, (स. सं),

प. पू. जैनाचार्य, विश्वपूज्य दादागुरुदेव श्रीमद्विजय राजेन्द्रसूरीश्वरजी म. सा. के प्रशिष्य पुण्य-सम्राट गुरुदेव श्रीमद्विजय जयन्तसेनसूरीश्वरजी म. सा. की पावन प्रेरणा से सम्पूर्ण भारत के विभिन्न श्रीसंघों में वर्षीतप की ऐतिहासिक तपस्या प्रारम्भ हुई थी, जिसका पारणा श्री सिद्धक्षेत्र पालीताणा तीर्थ में दिनांक 18 अप्रेल 2018 को पुण्य-सम्राट गुरुदेवश्री के पट्टधरद्वय गच्छाधिपति श्रीमद्विजय नित्यसेनसूरीश्वरजी म. सा. एवं माण्डवपुर तीर्थोद्धारक आचार्यदेवेश श्रीमद्विजय जयरत्नसूरीश्वरजी म. सा. आदि विशाल श्रमण-श्रमणिवृन्द की पावन निश्रा में श्री त्रिस्तुतिक जैन संघ द्वारा आयोजित और श्री जयन्त गिरि वर्षीतप पारणा समिति द्वारा निर्मित जयन्त गिरि पारणा नगर में त्रिदिवसीय महोत्सव के साथ सम्पन्न हुआ।

त्रिस्तुतिक जैन संघ में हुए वर्षीतप के तपस्वीरत्नों का दिनांक 17 अप्रेल 2018 को पालीताणा तीर्थ के राजमार्ग पर भव्यातिभव्य शोभायात्रा का आयोजन पुण्य-सम्राट गुरुदेवश्री के द्वय पट्टधर सहित तीर्थ में बिराजमान अनेक आचार्य भगवन्त एवं श्रमण-श्रमणि भगवन्तों की पावन निश्रा में किया गया। शोभायात्रा श्री आनन्दजी कल्याणजी पेढ़ी से प्रातः 8.30 बजे प्रारम्भ होकर राजमार्ग का परिभ्रमण करते हुए यतीन्द्र भवन होकर श्री जयन्त गिरि पारणा नगर में सम्पन्न हुई। दोपहर 2 बजे तपस्वीरत्नों की तपश्चर्या के अनुमोदनार्थ मंगल-गीत (साँझी) का संगीतमय कार्यक्रम हुआ। सांय 6 बजे गुरुभगवन्तों की निश्रा में तपस्वीरत्नों के साथ सम्पूर्ण देश से पधारे हजारों गुरुभक्तों की उपस्थिति में गिरि वधामणा का आयोजन किया गया।

इस त्रिवसीय पारणा महोत्सव में दिनांक 16 अप्रेल को पुण्य-सम्राट गुरुदेवश्री के द्वय पट्टधर की पावन निश्रा में श्री जयन्त गिरि पारणा नगर का उद्घाटन सम्पन्न हुआ। महोत्सव के तीनों दिन विविध संगीतकारों द्वारा भक्ति रस की स्वरलहरियों से वातावरण को भक्तिमय बना दिया।

गुरु गच्छ के इस अविस्मरणीय आयोजन में आचार्यदेवेश श्रीमद्विजय नरेन्द्रसूरीश्वरजी म. सा. सहित अनेक श्रमण-श्रमणि भगवन्तों की पावन उपस्थिति रही। देश के कोने-कोने से हजारों गुरुभक्तों ने इस ऐतिहासिक आयोजन को निहारा और अनुमोदना की।

पुण्य-सम्राट गुरुदेवश्री की प्रेरणा को साकार कर वर्षीतप की तपस्या करने वाले श्रमण-श्रमणि भगवन्तों में मुनिराजश्री भुवनरत्नविजयजी म., मुनिराजश्री पवित्ररत्नविजयजी म., सा. श्री अविचलदृष्टाश्रीजी म., सा. श्री अनुपमदृष्टाश्रीजी म., सा. श्री विद्वद्गुणाश्रीजी म., सा. श्री दर्शनकलाश्रीजी म., सा. श्री शासनलताश्रीजी म., सा. श्री अनेकांतलताश्रीजी म., सा. श्री विज्ञानलताश्रीजी म., सा. श्री चारित्रकलाश्रीजी म., सा. श्री शयोलताश्रीजी म., सा. श्री भक्तिरसाश्रीजी म., सा. श्री निरुपमकलाश्रीजी म., सा. श्री अपूर्वकलाश्रीजी म., सा. श्री मैत्रीकलाश्रीजी म., सा. श्री अक्षयकलाश्रीजी म., सा. श्री भाग्यकलाश्रीजी म., सा. श्री रश्मिप्रभाश्रीजी म., सा. श्री आर्जवकलाश्रीजी म., सा. श्री निर्वेदकलाश्रीजी म., सा. श्री आगमकलाश्रीजी म., सा. श्री काव्यरत्नाश्रीजी म., सा. श्री विपुलदर्शिताश्रीजी म., सा. श्री संवेगप्रियाश्रीजी म., सा. श्री अर्हतप्रियाश्रीजी म., सा. श्री सुमनकलाश्रीजी म., सा. श्री सौरभकलाश्रीजी म., सा. श्री कारुण्यलताश्रीजी म., सा. श्री वीतरागलताश्रीजी म., सा. श्री कुमुदप्रियाश्रीजी म., सा. श्री श्रेयषलताश्रीजी म., सा. श्री श्रुतिदर्शनाश्रीजी म., सा. श्री ऋजुप्रियाश्रीजी म., सा. श्री ध्रुवकलाश्रीजी म., सा. श्री स्मितप्रियाश्रीजी म., सा. श्री विबुधप्रियाश्रीजी म., सा. श्री संवरलताश्रीजी म., सा. श्री परार्थप्रियाश्रीजी म., सा. श्री परमेष्ठिलताश्रीजी म., सा. श्री सम्भवलताश्रीजी म., सा. श्री ज्योतिलताश्रीजी म., सा. श्री सुव्रतप्रियाश्रीजी म., सा. श्री सोहमप्रियाश्रीजी म., सा. श्री मन्त्रकलाश्रीजी म., सा. श्री सत्त्वप्रियाश्रीजी म., सा. श्री अर्पणप्रियाश्रीजी म., सा. श्री ह्रींकारलताश्रीजी म., सा. श्री नम्यरसाश्रीजी म., सा. श्री नैगमप्रियाश्रीजी म., सा. श्री देवप्रियाश्रीजी म. आदि के साथ लगभग 700 श्रावक-श्राविकाओं ने यह तपस्या की है।

पुण्य-सम्राट गुरुदेवश्री के पट्टधरद्वय गच्छाधिपति श्रीमद्विजय नित्यसेनसूरीश्वरजी म. सा. एवं माण्डवपुर तीर्थोद्धारक आचार्यदेवेश श्रीमद्विजय जयरत्नसूरीश्वरजी म. सा. आदि अनेक आचार्य भगवन्तों एवं श्रमण-श्रमणिवृन्द की पावन निश्रा में त्रिस्तुतिक जैन संघ द्वारा आयोजित त्रिदिवसीय आत्मोद्धार (सामूहिक दीक्षा) महोत्सव दिनांक 22 अप्रेल 2018 को विधि-विधान के साथ श्री जयन्त गिरि आत्मोद्धार मण्डप में सानन्द सम्पन्न हुआ।

आत्मोद्धार के प्रथम दिन 20 अप्रेल 2018 को यतीन्द्र भवन में इस त्रिदिवसीय महोत्सव का शुभारम्भ किया गया। प्रातः 6.30 बजे परमात्मा के अभिषेक किए गए। 9.30 बजे केशर छांटी गई तथा दोपहर 2.30 बजे छाब वधामणा कार्यक्रम अकल्पनीय एवं अनुमोदनीय किया गया। सायं 6 बजे तलेटी पर समवसरण मन्दिर में गिरिराज वधामणा कार्यक्रम अत्यन्त भाव एवं उल्लास के साथ गुरुभगवन्तों एवं हजारों गुरुभक्तों की उपस्थिति में किया गया। रात्रि 8 बजे उपकार स्मरणम का संगीतमय कार्यक्रम हुआ।

दूसरे दिन 21 अप्रेल 2018 को प्रातः 8 बजे वर्षीदान शोभायात्रा यतीन्द्र भवन से पुण्य-सम्राट के पट्टधरद्वय एवं विशाल श्रमण-श्रमणिवृन्द की पावन निश्रा में प्रारम्भ होकर जयन्त गिरि आत्मोद्धार मण्डप में सम्पन्न हुई। हजारों गुरुभक्तों की उपस्थिति से तलेटी रोड़ जयकारों की गूँज से गुँजायमान हो गया था। सभी 10 मुमुक्षुरत्न सुसज्जित बग्घियों में प्रसन्न मुद्रा में बैठी हुई थी। शोभायात्रा से पूर्व मुमुक्षुरत्नों ने सुपात्र भक्ति की, यतीन्द्र भवन परिसर में मुमुक्षुरत्नों के परिवारजनों ने अपनी लाड़ली बेटियों को जिनशासन और गुरुगच्छ को समर्पित की। इस समय परिवारजनों को विरह का गम था लेकिन उसके साथ ही उनके आध्यात्मिक जीवन का प्रारम्भ और आत्मकल्याण के मार्ग पर जाने की प्रसन्नता भी थी। आत्मोद्धार मण्डप में शोभायात्रा के पहुँचने के पश्चात् वहाँ दानशाला में मुमुक्षुरत्नों ने वर्षीदान किया। मुमुक्षु रत्नों के हाथ से एक स्थान पर बैठकर वर्षीदान देने का प्रारम्भ सन् 1998 से पुण्य-सम्राट गुरुदेव श्रीमद्विजय जयन्तसेनसूरीश्वरजी म. सा. की निश्रा में प्रारम्भ हुआ था वह नियम वर्तमान में भी चल रहा है। दोपहर 2.30 बजे साँझी-मंगलगीत का आयोजन हुआ जिसका लाभ पुण्य-सम्राट गुरुदेवश्री के जापान स्थित गुरुभक्तों ने लिया एवं इस प्रसंग पर उपस्थित रहने हेतु जापान से यहाँ पधारे। आत्मोद्धार के निमित्त मुमुक्षुरत्नों की ओर से पण्डितवर्यों का बहुमान किया गया। सायं 5 बजे मुमुक्षुरत्नों का अन्तिम वायणा (भोजन ग्रहण) कार्यक्रम हुआ। रात्रि 8 बजे विदाई समारोह एवं संयम संवेदना कार्यक्रम का भव्य आयोजन किया गया।

दिनांक 22 अप्रेल 2018 को आत्मोद्धार आयोजन पट्टधरद्वय गच्छाधिपति श्रीमद्विजय नित्यसेनसूरीश्वरजी म. सा. एवं माण्डवपुर तीर्थोद्धारक आचार्यदेवेश श्रीमद्विजय जयरत्नसूरीश्वरजी म. सा. आदि अनेक आचार्य भगवन्तों एवं श्रमण-श्रमणिवृन्द की पावन निश्रा में विधि-विधान के साथ प्रातः 6 बजे प्रारम्भ हुआ, यह कार्यक्रम दोपहर एक बजे पूर्ण हुआ। मुमुक्षु रत्नों के भागवती प्रव्रज्या अंगीकार करने के पश्चात साध्वी के रूप में- 1. गुड़िया कुमारी - साध्वीश्री शत्रुंजयलताश्रीजी म. सा., 2. मोक्षालीकुमारी - साध्वीश्री मधुकरलताश्रीजी म. सा., 3. पायलकुमारी - साध्वीश्री प्रत्यक्षप्रियाश्रीजी म. सा., 4. रिंकलकुमारी - साध्वीश्री कृतार्थप्रियाश्रीजी म. सा., 5. अनिताकुमारी - साध्वीश्री ऊनिधिश्रीजी म. सा., 6. मीनलकुमारी - साध्वीश्री कृपांशुनिधिश्रीजी म. सा., 7. प्रेमलतादेवी - साध्वीश्री प्रीतदर्शनाश्रीजी म. सा., 8. रीतूदेवी - साध्वीश्री रीतदर्शनाश्रीजी म. सा., 9. आरजूकुमारी - साध्वीश्री कर्त्तव्यदर्शिताश्रीजी म. सा. एवं 10. नियतिकुमारी - साध्वीश्री नमोनिधिश्रीजी म. सा. नाम घोषित हुए।

इस अवसर पर पुण्य-सम्राट गुरुदेवश्री के द्वय पट्टधर सहित गच्छाधिपतिश्री प्रद्युम्नविमलसागरजी म. सा., आचार्यदेवश्री विरवरत्नसागरजी म. सा. एवं आचार्यभगवन्त श्री नरेन्द्रसूरीश्वरजी म. सा. तथा 200 से अधिक श्रमण-श्रमणि भगवन्तों की उपस्थिति रही। पुण्य-सम्राट गुरुदेवश्री के देवलोकगमन पश्चात् श्रीसं का यह प्रथम दीक्षा महोत्सव हुआ।

चौराऊ नगर में पुण्य-सम्राट की प्रतिमा प्रतिष्ठित

प्रतिष्ठित प्रतिमा का पूजन करते हुए

उदयपुर (स. सं.)

जिला जालोर के चौराऊ नगर में पुण्य-सम्राट, राष्ट्रसन्त श्रीमद्विजय जयन्तसेनसूरीश्वरजी म. सा. की गुरुमूर्ति वैशाख शुक्ला पंचमी दिनांक 20 अप्रेल 2018 को हर्षोल्लास के साथ विराजमान की गई।

पुण्य-सम्राट गुरुदेव श्रीमद्विजय जयन्तसेन-सूरीश्वरजी म. सा. के पट्टधर गच्छाधिपतिश्री नित्यसेनसूरीश्वरजी म. सा. एवं माण्डवपुर तीर्थोद्धारक, आचार्यदेवेशश्री जयरत्नसूरीश्वरजी म. सा. के सुशिष्यरत्न मुनिराजश्री आनन्दविजयजी म. सा. आदि ठाणा एवं साध्वीश्री अरुणप्रभाश्रीजी म. सा. आदि ठाणा की शुभनिश्रा में दिनांक 18-19-20 अप्रेल 2018 को त्रिदिवसीय महोत्सवपूर्वक प्रतिष्ठा सम्पन्न की गई।

प्रतिमा विराजमान करने का लाभ श्रीमती हंसादेवी केशरीमलजी, सुखीदेवी पुखराजजी, कलश स्थापना का लाभ श्री माँगीलालजी गोवाणी की पुण्य-स्मृति में श्री दिलीपभाई, कुंकुं थापा का लाभ श्री शान्तिलालजी आदुलालजी पालरेचा, झालर बजाने का लाभ श्री सुरेशकुमारजी पुखराजजी मलाणी, अष्टप्रकारी पूजा का लाभ श्री. नेमिचन्दजी छगनराजजी, गोवाणी, गुरु आरती का लाभ श्री. उत्तमचन्दजी मोहनलालजी गोवाणी, प्रथम गहुँली का लाभ श्री. दिलीपकुमारजी पीरचन्दजी मुथा एवं गणक लाहू का लाभ श्री. राजमलजी नैनमलजी गोवाणी परिवार ने लिया।

मुनिराजश्री प्रवचन प्रदान करते हुए

त्रिदिवसीय महोत्सव में प्रतिदिन मुनिराजश्री आनन्दविजयजी म. सा. का प्रवचन, रात्रि संगीतकारों द्वारा भक्ति आदि कार्यक्रम आयोजित किए गए। प्रतिष्ठा के दिन विधिविधान के साथ पूर्ण उत्साह, उमंग के वातावरण में जयकारों के साथ पुण्य-सम्राट की मूर्ति प्रतिष्ठित की गई।

शासन स्थापना दिवस पर ध्वजारोहण

उदयपुर (स. सं.)

जिनशासन की स्थापना दिवस पर दिनांक 26 अप्रेल 2018 को श्री महावीरजी मन्दिर पर सकल जैन श्रीसंघ द्वारा जिनशासन का ध्वज फहराया गया।

ध्वजारोहण श्री कान्तिलाल मण्डारी, मणिलाल खजांची, मनोहरलाल जैन, दिनेश मामा, जयप्रकाश जैन, सचिन जैन, कीर्ति मण्डारी, अभय मुठरिया, सन्दीप जैन, कमलेश हरण एवं निकिता मण्डारी आदि समाजजनों की उपस्थिति में उक्त समारोह सम्पन्न हुआ।

श्री कान्तिलाल मण्डारी ने जिनशासन दिवस की महता पर प्रकाश डाला। उसके पश्चात ध्वज गीत गाया गया।

शासन स्थापना दिवस पर संगोष्टी सम्पन्न

छन्दराज ॐ पारदर्शी फाउण्डेशन द्वारा शासन स्थापना दिवस हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। जिसमें दीक्षा जैन ने शासन स्थापना की महत्ता पर प्रकाश डालते हुए कहा कि अगर वीर प्रभु ने शासन की स्थापना न की होती तो हम सबको जैन धर्म कैसे प्राप्त होता ? हमें जैन धर्म प्राप्त हुआ इसका बहुमान करने हेतु प्रतिवर्ष वैशाख शुक्ला 11 को शासन स्थापना दिवस हर्षोल्लास के साथ मनाना चाहिये।

सर्वप्रथम जैनध्वज फहराया गया। अन्य वक्ताओं में कुलदीप 'प्रियदर्शी', गोपाल सोनी, कल्पना जैन, इन्दुबाला जैन, युक्ति डाँगी, अंशुल जैन आदि ने प्रमुख थे। अन्त में फाउण्डेशन की ओर से पधारे अतिथियों का आभार प्रज्ञा जैन ने व्यक्त किया।

बालिका परिषद् का गठन

उदयपुर (स. सं.)

माण्डवपुर तीर्थ में पुण्य-सम्राट की पुण्यतिथि पर मुनिराजश्री आनन्दविजयजी म. सा. आदि ठाणा एवं विदुषी साध्वीश्री सूर्यकिरणाश्रीजी म. सा. आदि ठाणा की शुभनिश्रा में मेंगलवा बालिका परिषद् का गठन किया गया।

महिला परिषद् की राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष पारमणिबेन जावरा, राष्ट्रीय महामन्त्री पद्मा सेठ एवं परिषद् मिडिया प्रभारी ब्रजेश बोहरा के निर्देशन में सर्वानुमति से बालिका परिषद् का गठन किया गया, जिसमें अध्यक्ष शिल्पा सिंघवी, उपाध्यक्ष रिंकू वागरेचा व सचिव भाविका मोदी को बनाया गया। गठन के पश्चात् बालिका परिषद् में होने वाली गतिविधियों से अवगत करा उन्हें देव, गुरु, धर्म के प्रति समर्पित रहने के लिए प्रेरित किया। राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री रमेश धरूँ ने बालिका परिषद् के पदाधिकारियों को बधाई देते हुए उन्हें पूर्ण सहयोग की बात कही।

महिला परिषद् का गठन

बागरा (स. सं.),

महिला परिषद् की राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष पारमणिबेन जावरा, राष्ट्रीय महामन्त्री पद्मा सेठ एवं परिषद् मिडिया प्रभारी ब्रजेश बोहरा पुण्यतिथि प्रसंग पर पधारे। बागरा श्रीसंघ की ओर से सभी का बहुमान किया गया। प्रसंग के पश्चात् स्थानीय महिलाओं से चर्चा कर महिला परिषद् शाखा बागरा का गठन किया गया साथ ही स्थानीय परिषद् द्वारा सप्तमी पर गुरुदेव की पूजन वर्षभर पढ़ाने की शुरूआत की जिसका लाभ बागरा निवासी द्वारा लिया गया।

मेंगलवा में जैन सन्तों का मंगल प्रवेश

उदयपुर (स. सं.)

सांसारिक जीवन को त्यागकर वैराग्य धारण करने जा रही मेंगलवा नगर की लाड़ली मुमुक्षु गुड़ियाकुमारी शारदा सम्पतकुमारजी उम्मेदमलजी कंकुचोपड़ा के दीक्षा कार्यक्रम को लेकर मुनिराजश्री आनन्दविजयजी म. सा. आदि ठाणा का बाजे-गाजे के साथ मंगल प्रवेश हुआ।

मुनिराजश्री आनन्दविजयजी म. सा. आदि ठाणा की निश्रा में दीक्षा कार्यक्रम के अन्तर्गत बाजे-गाजे, ढोल-ढमाको के साथ वर्षीदान की भव्य शोभायात्रा निकाली गई। मोह-माया की दुनिया का त्याग कर धर्म के पथ पर अग्रसर हुई ग्राम की बेटी का प्रत्येक वर्ग ने स्वागत-अभिनन्दन किया। शोभायात्रा में ध्वज, हाथी, घोड़े सहित बालिका परिषद् की बालिकाएँ मंगल कलश लिए चल रही थीं। ढोल की थाप पर युवा नृत्य कर रहे थे। गुरुदेव के जयकारों एवं दीक्षार्थी की जय-जयकार से वातावरण गूँज उठा था। जिस मार्ग से शोभायात्रा निकल रही थी उस मार्ग पर नगरवासियों द्वारा जगह-जगह पुष्प वर्षा कर गुरुदेवश्री का एवं दीक्षार्थी का स्वागत किया। मुनि भगवन्तों का गहुँली करते हुए श्राविकाओं ने मंगल गीतों से स्वागत किया।

मंगल प्रवेश के पश्चात् धर्मसभा में प्रवचन प्रदान करते हुए मुनिराजश्री आनन्दविजयजी म. सा. ने कहा कि धर्म का अनुसरण करने से पहले धर्म की परिभाषाएँ, उसके नियम के बारे में ज्ञान होना जरूरी है। धर्म का पालन करने के लिए कर्म का होना आवश्यक है। धर्म को अपनाने के लिए, उसके महत्व कर जानकारी के लिए गुरुजनों का मार्गदर्शन चाहिये। बिना गुरु धर्म का मार्ग आसान नहीं है। गुरु बिना किए गए लाखों-करोड़ों के धर्म से कर्म के बन्धनों से मुक्ति नहीं मिल सकती है। अच्छे-बुरे कर्मों का बन्धन तोड़ने के लिए जीवन में धर्म की भावना ही जागृत होनी चाहिये।

दाधाल में वर्षीदान का वरघोड़ा

उदयपुर (स. सं.)

दाधाल नगर की मुमुक्षु पायलकुमारी सुपौत्री श्रीमती सुबटीदेवी राणमलजी सांसारिक जीवन को त्यागकर भागवती प्रव्रज्या अंगीकार करने जा रही है।

मुनिराजश्री आनन्दविजयजी म. सा., मुनिश्री अमृतरत्नविजयजी म. सा. एवं मुनिश्री जिनरत्नविजयजी म. सा. आदि ठाणा की निश्रा में बैण्ड-बाजे, ढोल-नगाड़ों के साथ वर्षीदान की भव्य शोभायात्रा निकाली गई। भौतिक सुख-सुविधाओं से लिप्त दुनिया का त्याग कर धर्म के पथ पर अग्रसर हुई दाधाल नगर की लाड़ली बिटिया जब सुसज्जित रथ पर सवार होकर नगर के मार्ग पर निकली को नगर के हर वर्ग ने स्वागत-अभिनन्दन करते हुए अनुमोदना की। शोभायात्रा में ध्वज, हाथी, घोड़े, नृत्य मण्डलियाँ सभी को अपनी ओर आकर्षित कर रही थीं। महिलाएँ सिर पर मंगल कलश लिए शोभायमान हो रही थीं। ढोल की मधुर थाप पर युवा नृत्य कर रहे थे। जिनशासन व गुरुदेव के जयकारों एवं दीक्षार्थी की जय-जयकार से सारा नगर गुँजायमान हो रहा था। वर्षीदान वरघोड़ा नगर के जिस मार्ग पर परिभ्रमण कर रहा था नगरवासी स्थान-स्थान पर पुष्प वर्षा कर गुरुदेवश्री का एवं दीक्षार्थी का स्वागत-अभिनन्दन कर रहे थे। वरघोड़ा समापन पर आयोजित धर्मसभा में मुनिराजश्री आनन्दविजयजी म. सा. ने सारगर्भित प्रवचन प्रदान किया।

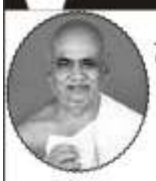

मालवा में गच्छाधिपतिश्री एवं मारवाड़ में आचार्यदेवेशश्री का चातुर्मास हजारों गुरुभक्तों की उपस्थिति में उद्घोषित

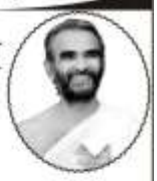

उदयपुर, (स. सं.),

पुण्य-सम्राट गुरुदेवश्री की परम्परानुसार चातुर्मास उद्घोषणा पर्व दिनांक 31-3-2018 को गच्छाधिपति श्रीमद्विजय नित्यसेनसूरीश्वरजी म. सा. एवं माण्डवपुर तीर्थोद्धारक, संघशिल्पी आचार्यदेवेश श्रीमद्विजय जयरत्नसूरीश्वरजी म. सा. सहित अनेक श्रमण-श्रमणिवृन्द के चातुर्मासों की घोषणा अनेक श्रीसंघों एवं हजारों गुरुभक्तों की उपस्थिति में यतीन्द्र भवन, पालीताणा में गच्छाधिपतिश्री द्वारा की गई।

श्रमणवृन्द चातुर्मास

उज्जैन (म. प्र.)

गच्छाधिपति श्रीमद्विजय नित्यसेनसूरीश्वरजी म. सा. आदि श्रमण-श्रमणिवृन्द।

माण्डवपुर तीर्थ (राज.)

माण्डवपुर तीर्थोद्धारक आचार्यदेवेश श्रीमद्विजय जयरत्नसूरीश्वरजी म. सा. आदि ठाणा-5।

मोटेरा-अहमदाबाद (गुजरात)

मुनिराजश्री वीररत्नविजयजी म. सा. आदि ठाणा।

भारतनगर-मुम्बई (महाराष्ट्र)

मुनिराजश्री वैभवरत्नविजयजी म. सा. आदि ठाणा।

चैन्नई (तमिलनाडु)

मुनिराजश्री संयमरत्नविजयजी म. सा. आदि ठाणा।

मीठाखली-अहमदाबाद (गुजरात)

मुनिराजश्री जिनागमरत्नविजयजी म. सा. आदि ठाणा।

पाटण (गुजरात)

मुनिराजश्री चारित्ररत्नविजयजी म. सा. व मुनिराजश्री निपुणरत्नविजयजी म. सा. आदि ठाणा-6।

पालीताणा (सौराष्ट्र)

मुनिराजश्री अपूर्वरत्नविजयजी म. सा., मुनिराजश्री विनयरत्नविजयजी म. सा. आदि ठाणा।

श्रमणिवृन्द चातुर्मास

माण्डवपुर तीर्थ (राज.)

विदुषी साध्वीरत्नाश्री सूर्यकिरणाश्रीजी म. सा. आदि ठाणा।

मीठाखली-अहमदाबाद (गुजरात)

साध्वीश्री स्वयंप्रभाश्रीजी म. सा. साध्वीश्री कनकप्रभाश्रीजी म. सा. आदि ठाणा।

पालड़ी-अहमदाबाद (गुजरात)

साध्वीश्री पूर्णकिरणाश्रीजी म. सा. आदि ठाणा।

मोटेरा-अहमदाबाद (गुजरात)

साध्वीश्री कल्पलताश्रीजी म. सा. आदि ठाणा।

बीजापुर (कर्नाटक)

साध्वीश्री सूर्योदयाश्रीजी म. सा. आदि ठाणा।

सूरत (गुजरात)

साध्वीश्री शशिप्रभाश्रीजी म. सा. आदि ठाणा।

अहमदाबाद (गुजरात)

साध्वीश्री रंजनामालाश्रीजी म. सा. आदि ठाणा।

नीमच (म. प्र.)

साध्वीश्री पुण्यदर्शनाश्रीजी म. सा. आदि ठाणा।

खानपुर-अहमदाबाद (गुजरात)

साध्वीश्री रत्नयशाश्रीजी म. सा. आदि ठाणा।

कुक्षी (म. प्र.)

साध्वीश्री अविचलदृष्टाश्रीजी म. सा. आदि ठाणा।

नवावाडज-अहमदाबाद (गुजरात)

साध्वीश्री अनुपमदृष्टाश्रीजी म. सा. आदि ठाणा।

इन्दौर (म. प्र.)

साध्वीश्री अमितदृष्टाश्रीजी म. सा. आदि ठाणा।

सूरत (गुजरात)

साध्वीश्री अनन्तदृष्टाश्रीजी म. सा. आदि ठाणा।

मेघनगर (म. प्र.)

साध्वीश्री शासनलताश्रीजी म. सा. आदि ठाणा।

अलीराजपुर (म. प्र.)

साध्वीश्री अनेकान्तलताश्रीजी म. सा. आदि ठाणा।

डीसा (गुजरात)

साध्वीश्री भक्तिरसाश्रीजी म. सा. आदि ठाणा।

भाटपचलाना (म. प्र.)

साध्वीश्री भाग्यकलाश्रीजी म. सा. आदि ठाणा।

थराद (गुजरात)

साध्वीश्री काव्यरत्नाश्रीजी म. सा. आदि ठाणा।

भीनमाल (राज.)

साध्वीश्री प्रीतिदर्शनाश्रीजी म. सा. आदि ठाणा।

जालोर (राज.)

साध्वीश्री संवेगप्रियाश्रीजी म. सा. आदि ठाणा।

आहोर (राज.)

साध्वीश्री अमृतरसाश्रीजी म. सा. आदि ठाणा।

भायन्दर-मुम्बई (महाराष्ट्र)

साध्वीश्री योगनिधिश्रीजी म. सा. आदि ठाणा।

श्वेतवाड़ी-मुम्बई (महाराष्ट्र)

साध्वीश्री रिद्धिनिधिश्रीजी म. सा. आदि ठाणा।

अनेक श्रमण-श्रमणिवृन्द के चातुर्मास की घोषणा होना बाकी है। अगले अंक में इसकी जानकारी प्रकाशित की जायेगी। अनेक श्रीसंघों की विनतियाँ पुण्य-सम्राट के पट्टधर द्वय के पास आई है जिसकी स्वीकृति अतिशीघ्र प्रदान की जायेगी।

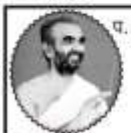

प. पू. पुण्य-सम्राट **श्रीमद्विजय जयन्तसेनसूरीश्वरजी म. सा.** के पट्टधर
माण्डवपुर तीर्थोद्धारक, संघशिल्पी, आचार्यदेवेश
श्रीमद्विजय जयरत्नसूरीश्वरजी म. सा.
आदि ठाणा के **श्री राजेन्द्र-शान्ति विहार मोटेरा मध्ये**

अल्पाहार लाभार्थी-
श्रा. जयन्तीलाल परोत्तमदास बोहेरा
दूधवा-थराद (गुजराज)

भव्य मंगल-प्रवेश
दिनांक 5 मई 2018 प्रातः 7.30 बजे
अशोक विहार मोटेरा से

आमन्त्रक- **श्री शान्तिदूत जैनोदय ट्रस्ट, श्री राजेन्द्र-शान्ति जैनोदय ट्रस्ट, श्री राजेन्द्र-शान्ति विहार**
साबरमती-गाँधीनगर हाईवे, कृष्णा बंगलोज के सामने, विसामो सोसायटी के पास, मोटेरा-अहमदाबाद

श्री भाण्डवपुर महातीर्थ में वर्षीतप पारणा महोत्सव सम्पन्न

भाण्डवपुर (स. सं.),

श्री भाण्डवपुर महातीर्थ में प्रतिवर्ष की भाँति इस वर्ष भी दिनांक 18 अप्रेल 2018 को आयोजित भव्य आयोजन में 18 वर्षीतप के आराधकों ने अक्षय तृतीया को पारणा किया । प. पू. राष्ट्रसन्त, पुण्य-सम्राट गुरुदेव श्रीमद्विजय जयन्तसेनसूरीश्वरजी म. सा. के पट्टधर गच्छाधिपतिश्री नित्यसेनसूरीश्वरजी म. सा. एवं भाण्डवपुर तीर्थोद्धारक, आचार्यदेवेशश्री जयरत्नसूरीश्वरजी म. सा. के सुशिष्यरत्न मुनिराजश्री आनन्दविजयजी म. सा., मुनिश्री अमृत-रत्नविजयजी म. सा., मुनिश्री जिनरत्नविजयजी म. सा. एवं विदुषी साध्वीरत्नाश्री सूर्यकिरणाश्रीजी म. सा. आदि श्रमणिवृन्द की पावन निश्रा में वर्षीतप पारणा सम्पन्न हुआ ।

मुनिराजश्री आनन्दविजयजी म. सा. आदि श्रमण-श्रमणिवृन्द की निश्रा में भव्य वरघोड़ा निकाला गया जिसमें बैण्ड-बाजों और ढोल की मधुर थाप पर युवा नृत्य कर रहे थे । तपस्वियों को सुसज्जित बग्घी में बिठाया गया । जयकारों एवं तपस्वी अमर रहे के नारों से सम्पूर्ण वातावरण को गुरुभक्त गुँजायमान कर रहे थे । वरघोड़े में समीपवर्ती ग्रामों के साथ ही हजारों गुरुभक्त एवं गणमान्य उपस्थित थे ।

श्रेयांस कुमार बनकर पारणा कराने का लाभ श्रा. भँवरलालजी मेघराजजी छत्रिया वोरा परिवार, सुराणा मिलियन ग्रुप ने लिया । ईक्षुरस अभिषेक का लाभ श्रा. शान्तिलालजी पुखराजजी सोलंकी, सायला एवं अष्टप्रकारी पूजा का लाभ भी आपने ही लिया ।

अन्त में श्री महावीर जैन श्वेताम्बर पेढ़ी (ट्रस्ट) की ओर से सभी तपस्वियों का माला, साफा, तिलक, श्रीफल, शॉल एवं अभिनन्दन-पत्र द्वारा बहुमान किया गया ।

वर्षीतप के आराधकों में प्रथम वर्षीतप के तपस्वी 1. श्रा. महेन्द्रकुमारजी मानमलजी छत्रिया वोरा, सुराणा, 2. श्रीमती सवितादेवी महेन्द्रकुमारजी छत्रिया वोरा, सुराणा, 3. श्रीमती कानूदेवी रमेशकुमारजी शाहजी, पाँथेड़ी, 4. श्रीमती विमलादेवी सूरजमलजी अंदाणी, सुराणा, 5. श्रीमती मन्जूदेवी चन्दनमलजी अंदाणी, सुराणा, 6. श्रीमती सुखीदेवी शान्तिलालजी सोलंकी, सायला, 7. श्रीमती सुन्दरदेवी नेमिचन्दजी श्रीमाल, पादरू, 8. श्रीमती सुशीलादेवी गौतमचन्दजी छत्रिया वोरा, सुराणा, 9. श्रीमती पुष्पादेवी पुखराजजी फोलामुथा, सायला, 10. श्रीमती रेखादेवी नेमिचन्दजी बोहरा, बाकरा, 11. श्रीमती शान्तादेवी चुन्नीलालजी चौरड़िया, जालोर थे ।

द्वितीय वर्षीतप के तपस्वी श्रीमती सुशीलादेवी सुरेशकुमारजी पालगोता-चौहान, सुराणा थे ।

तृतीय वर्षीतप के तपस्वी 1. श्रीमती मन्जूदेवी धनराजजी नाहटा, बीकानेर, 2. श्रीमती फेन्सीदेवी दलीचन्दजी ओबाणी, पोषाणा थे ।

आठवें वर्षीतप के तपस्वी श्रीमती विमलादेवी हीराचन्दजी राँका, उम्मेदाबाद (गोल) थे ।

बारहवें वर्षीतप के तपस्वी श्रीमती डाइदेवी सोहनराजजी सोलंकी, सायला थे ।

योगी-वाणी

तालाब सदा कुए से सैकड़ों गुना बड़ा होता है फिर भी लोग कुए का ही पानी पीते हैं । क्योंकि कुए में गहराई और शुद्धता होती है ।

मनुष्य का बड़ा होना अच्छी बात है, परन्तु उसके व्यक्तित्व में गहराई और विचारों में शुद्धता भी होनी चाहिये तभी वह महान बनता है ।

-योगिराज गुरु श्री शान्तिविजयजी

आत्मीय निवेदन

समस्त श्रीसंघों के अध्यक्षों, साधु-साध्वी भगवन्तों से निवेदन है कि आप अपने यहाँ होने वाले कार्यक्रमों के समाचार आदि प्रकाशित सामग्री प्रत्येक मास की 10 व 20 तारीख तक 'यतीन्द्र वाणी' में प्रकाशनार्थ भिजावें ।

-सम्पादक, यतीन्द्र वाणी,
श्री राजेन्द्र-शान्ति विहार,
साबरमती-गाँधीनगर हाइवे, पो.- मोटेरा-382 424

श्री राजेन्द्र-धनचन्द-भूपेन्द्र-यतीन्द्र-विद्याचन्द्र-जयन्तसेन-शान्ति गुरुवरों के विचारों एवं कार्यों को समर्पित
सम्पूर्ण जैन समाज का ज्ञानवर्धक लोकप्रिय हिन्दी पाक्षिक पत्र

यतीन्द्र वाणी

हिन्दी पाक्षिक

सम्पादक
पंकज बी. बालड़

सह सम्पादक
कुलदीप डोंगी 'प्रियदर्शी'

प्रधान कार्यालय
श्री राजेन्द्र-शान्ति विहार
विसामो बंग्लोज के पास,
विसत-गाँधीनगर हाइवे,
मोटेरा, चान्दखेड़ा, साबरमती,
अहमदाबाद-382 424 (गुजरात)

सदस्य शुल्क

संरक्षक सं.	11000/- रुपये
सदस्य सं.	7100/- रुपये
आजीवन ग्राहक	1000/- रुपये
एक प्रति	5/- रुपये

विज्ञापन दर

प्रथम पूरे पृष्ठ के -	5100/- रुपये
अन्य पूरे पृष्ठ के -	2100/- रुपये
अन्तिम पूरे पृष्ठ के -	3100/- रुपये
अन्दर के एक चौथाई के -	801/- रुपये

विशेष सूचना- प्रत्येक मास की 10 एवं 20 तारीख तक विज्ञापन एवं समाचार कार्यालय पर भेजना अनिवार्य है । चैक या ड्राफ्ट 'यतीन्द्र वाणी' के नाम से भेजें ।

* लेखक के विचारों से संस्था और सम्पादक का सहमत होना अनिवार्य नहीं । * सम्पादक, यतीन्द्र वाणी

प्रेषक :
यतीन्द्र वाणी (हिन्दी पाक्षिक)
C/o. श्री राजेन्द्र-शान्ति विहार
विसामो बंग्लोज के पास,
विसत-गाँधीनगर हाइवे,
मोटेरा, चान्दखेड़ा, साबरमती,
अहमदाबाद-382 424 (गुजरात)
दूरध्वनि : 079-23296124,
मो. 09426285604
e-mail : yatindravani222@gmail.com
www.shrirajendrashantivihar.com

'Reg. Under Postal Registration No. AHD-C/22/2018-2020 VALID UPTO 31st December-2020 issued by the SSPO's Ahmedabad City Division, permitted to post at Ahmedabad PSO on 1st & 15th every month'
RNI No. GUJ/HIN/1999/321
Licensed to Post Without Prepayment No. PMG/HQ/070/2018-20 valid up to 31/12/2020

श्री.....
.....
.....

स्वत्वाधिकार प्रकाशक, मुद्रक- शान्तिदूत जैनोदय ट्रस्ट, सम्पादक- पंकज बी. बालड़, यतीन्द्र वाणी हिन्दी पाक्षिक, श्री राजेन्द्र शान्ति विहार, पो.- मोटेरा-382 424 से प्रकाशित एवं सनसाईन फोटो प्रिन्ट, एफ-4, तुषार सेन्टर, नवरंगपुरा, अहमदाबाद में मुद्रित